पुस्तक मिलनेका पता—

प्रतापमल मूलचन्द,

पो० डूंगरगढ़,

जि० बीकानेर।

मुद्रक
बाबू रामसहाय वर्म्मा
"चित्रगुप्त प्रेस"
१४७ काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

सोमल ब्राह्मण करी तुम चर्चा, दुधारा प्रश्न करायो; जिणनें मुक्ति इण भव दीधी, श्री पंचम अंग दिखायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन माली षट मासां तांई, सात मनुष्य नित घायो जिणनें मुक्ति दीवी छिन भरमें, सकल ही पाप गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्री वीर प्रभूसें अरज करत हूं, मुजनें किम विसरायो; नहीं अधिकाई काष्ट जल तारे, अधिकाई पाहण तरायो ॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार किया बहुतेरा सहुना काज सरायो; मुनि राम कहे मुज तारन विरियां, किम आलस दरसायो ॥ना०॥८॥

॥ इति कर्मोंकी लावणी समाप्तम् ॥

अथ श्रीसीमंधर स्वामीजीका स्तवन लिख्यते ।

(में सुणी कन्तकी वात, नार एक घाली घरमांई जी; धण छोड चल्यौ परदेश पियो जा वस्यौ मंमाई जी॥ एदेशी)

मैंने तज दीये घरवार, सुनो मेरे अन्तर-जामीजी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वामीजी॥टेर॥ मैं तड़फत हूं दिन रैन, मोयकूं कर्म सन्तावेजी; मैं देउं दिलकूं ज्ञान, जवी समता घर आवेजी; मेरे प्रभू वसे परदेश, सदा जहां केवल पावेजी; प्रभू वसे समुद्रां पार मिलन कैसे वन जावेजी; मेरे बीचमें पड़ रहे पहाड़, मोय कुन पार लंघावेजी; नहीं दीवो विधाता पंख, देवत पिण नांहीं पुगावेजी; मेरे लग रही दिलके मांय, दर्श कहो कौन करावेजी;

न थाई जी; मुनी रामचन्द्रकी जोड़, कला सबके मन भाई जी; मैं सुनी शास्त्रकी बात, गुरु एक मिल गये नामी जी: प्रभु दूर बसै परदेश; श्री सीमंधर स्वामी जी ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सीमंधर स्वामीजी का स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ गुरु उपदेशी लिख्यते ॥

(ख्याली आयो मुलतानसें ॥ ए देशी)

पार न पायो गुरु ज्ञानको, भलो बनायो मारग जैनको ॥ पार० ॥ टेर ॥ दान सुपात्र मुनिकूं दीजो, पायो शालिभद्र फल दान को ॥ पा० ॥ १ ॥ शील रत्न जतन करी रखो, ज्यूं सुधरे थांरो मानखो ॥ पा० ॥ २ ॥ तप बिना नहीं मोक्ष मिलत है, नष्ट करे कर्म

वितान को ॥ पा० ॥ ३ ॥ देखो भाव शिरोमण शुद्ध परणामे, मरु देव्या भरत राजान को ॥ पा० ॥ ४ ॥ जीव अजीव पुन्य पाप बतायो, कीयो आश्रव संवर पिछानको ॥ पा० ॥ ५ ॥ निर्जरा बंध क्रिय मोक्ष दिखायो, शासन बतायो वर्धमानको ॥ पा० ॥ ६ ॥ रामचन्द्र कहे सतगुरु सच्चा, नाश करयो रे अज्ञान को ॥ पा० ॥ ७ ॥

॥ इति गुरु उपदेशी समाप्तम् ॥

॥ अथ उपदेशी लावणी लिख्यते ॥

(गेरोजी कृत गुलाबरो ॥ए देशी)

तेरो जी कूण संसारमें, ओ तो मेरो मेरो एक न कोय ज्ञानी जिवड़ा, तूं पिण नहीं छे केहनो, तूं तो अन्दर ज्ञानसुं जोय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥

ए तो उल्टा धर्म लजावे, जांने निर्लोभी कुण गावे ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ केई तन ऊपर ममता धर जी २; ए तो खाय खाय मांस वधावे, जांने तपस्या दाय न आवे, आखर लोभी गणिया जावे ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ केई कथन करावे केई ढंगसूं जी २; है कोई राजाजीकूं लावे, हे कोई दिवानकूं बुलवावे, धनवंत देख देख घतलावे ॥ म्हे० ॥६॥ केई महिमा वांछे आपणी जी २; निज महिमासूं फूल जावे, जांरे तत्व हाथ नहीं आवे, मुनि रामचन्द्र दरसावे ॥ म्हे० ॥ ७ ॥

॥ इति लोभ गर्भित हितोपदेश ॥

है सो लोजियेजो, कांइ कहणा है सो केह ॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगी चहुं फेर सुं जी, कांइ मिल रही झालो झाल, मुनिराम कहे सहु काडजो जी, कांइ इण घरमें बहु माल ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ इति उपदेशी पद समाप्तम् ॥

—:६:—

॥ अथ उपदेशी फटको लिख्यते ॥

(मत करना परतीत रांडकी मारा सेर,
देगई टारा ए देशी)

चले न किसका जोर मीजाजी, होनहार होवे, मीजाजी होनहार होवे; जोशी सिद्ध मीये अर अवधू, खड़ा खड़ा जोवे ॥ टेर ॥ जो जोशी जोतिषकूं वरने, वात सची दीसे उनकूं

॥ भला बा० ॥ राजा प्रजा पाये लग्गे, ईश्वर ही जाने जिनकूं; तेजो मंदी होवे रे मालम, क्यूं जाचे औरनकूं; भला क्यूं० ॥ अंक फर्क जोशी कूं दीसे, छिनमें मार लेवे धनकूं; सब कोइ जोशी फैल करत हे, होतवनेको कुण धोवे ॥ भला हो० ॥ च० ॥ १ ॥ राख लगाये जटा बंधाये, क्या सिद्धी पाते हें बाबू. भला क्या० गंगा पर हरद्वार ठिकाना, होग लाज रहें आबू; जड़ी बुंटीका स्वर्ग कुनका. नड़ाका मारे, माजाजी ॥ न० ॥ भोलेकों भरमावे विरथा, सब ही धनारे. साच किसीके पास नहीं हे, जन्म वृथा खावे ॥ भला ज० ॥ च० ॥ २ ॥ मुसलमान परवीन ही देखा, जादूगर रमली. ॥ भला जा० ॥ डोरे गंडे झाड़ फूंके, थान सिलाने हें अगली; देख देखनें सबही देखा, पुरखासा जंगली ॥ भला पु० ॥ इल्म किसीके पास न सच्चा. ठगबाजी सगली, सिसिया

हिमिया रिमिया बोले, किमियाकूं रोवे ॥ भला कि० ॥ च० ॥ ३ ॥ जंत्र मंत्र और टांणे टूंणे, उच्चाटन सारे, भला उ० ॥ जो किसीका किस पर चल्ले, चाहे सो मारे, कर्म प्रमाणे सुख दुख भुगते समझो दिल प्यारे ॥ भला स० ॥ नास्ति नहींको विरला होगा, होते नहीं म्हारे, सच्चा इल्मी उसकुं समझो, सुकृत फल बोवे ॥ भला सु० ॥ च० ॥ ४ ॥ साध संत अर अवधू नग्गे, मौनी अर मुल्ला, ॥ भला मौ० ॥ साच बात तो कोइयन पाई, मारत है गल्लां; अंदर छोड़ी बाहिर ढूंढे, किम पाते रस्ता ॥ भला कि० ॥ ऋद्धि सिद्धि सब मांहि विराजे, क्यूं इत उत धस्ता, मुनिराम कहै वो इल्मी सच्चा, निज मटनें धोवे ॥ भला नि०॥ च० ॥५॥

॥ इति उपदेशी फटको समाप्तम् ॥

—:※:—

क्या तुम मछ्यां खाते, हां खाते मदिरा संत;
क्या मद्य भी पीते बावो बोले, पीवां वेश्या
समेत हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ क्या वेश्या भी सेते
बोले जोगी, अरि शिर पग दे जाते; कुंन तुज
वैरी वो मुज वैरी भांत भदेहां राते हो ॥ सं०
॥ ७ ॥ क्या चोरीभी करते दीसो बावू, हां
घृत हेत करां चोरी; सुणने दिलमें राजा चम-
क्यो ए गत होसी मोरी हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ राजा
बोले सुण बावाजी, हूं जुवारीमें मोटो; किसी
तणांमें कह्यो न मान्यो, जाण्यो व्यसन ए
खोटो हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ सुणीये बावू कहे इम
जोगी, जो तूं जुवा रमसी; चोरी नारीपर
मदिरा मांस, वेश्या शिकार तूं भमसी हो ॥
सं० ॥ १० ॥ राजा बोले सुणो बावाजी, भुल
चुक नहीं रमसुं; मुनिराम कहै संग उत्तम
करीये, सीख देवो उत्तसुं हो ॥ सं० ॥ ११ ॥

॥ इति जुवा निषेध लावणी समाप्तम् ॥

उपजे, देखो कर्मका जोर हो ॥ सं० ॥ ५ ॥
कलकल एक रात्री लग रेहे, पंच रात्री वुद्-
वुद रुप : पक्ष करीनें ईंडो होवे, इम बोले
जिन भूप हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ शिरोंकुर एक
मास करी होवे, मास दोय उर घाट ; तीन
माससें उदर बनत है, चतु मासे कर फाट
हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ पंच मास करीनें अंगुली
प्रगटे, रोम दृष्टी पट मास : सर्वावयव रहे
मास सातसें, जिनवर कीयो प्रकाश हो ॥
सं० ॥ ८ ॥ चरण ऊर्ध्व अरु मस्तक नीचो,
चर्म पक्षी परे टिरियो ; नव दक्ष मासे वायु
प्रकोपे, गर्भ थकी नीसरीयो हो ॥ सं० ॥९॥
नव द्वार करीने अशुचि वहे नित, छे मल
मुत्रकी खान ; मुनि राम कहै इन काया
सेती, सदा करो धन ध्यान हो ॥ सं० ॥ १०॥

॥ इति उपदेशी स्तवन समाप्तम् ॥

—:ॐ—

एक कोड़ अस्सी लाख; महाभारत आगे हुवो सरे, छै सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥३॥ जादव कुलमें आयने सरे, कमला कीधो वास; पुरी द्वारका सुर करी सरे, सब सोवन घर वास; एक दिन ऐसो आवियो- सरे, हुवो जादव केरो नासरे; ॥ मु० ॥ ४ ॥ राय प्रदेशीरे होतो सरे, सूरी कंता नार; इष्ट कांत वाल्ही घणी सरे, सूत्रमें अधिकार; निज स्वारथ विन पापणी सरे, मार्‍यो निज भरतार रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ ज्रुट्टल श्रावकने हुंती सरे, दइता तीसनें दोय; अग्नि माहीं प्रजालीयो सरे, दया न आणी कोय; माठी गतनी पाहुणी सरे, गई जमारो खोयरे ॥मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणी सरे, हूंती चूलणी मात, व्यभिचारण चूक गइ सरे, दीर्घ रायके साथ, घात विचारी पुत्रनी सरे, छे ए बहुली वातरे ॥मू०॥ ७ ॥ सहस त्रिया त्रिखंड धणी

त्रिया सरे, जोवो हीये विचार रे ॥ मू० ॥१२॥ जर जोरूके कारणे सरे, तुटे जुनो प्यार; जे नर जाणे आपणी सरे, ते नर मूढ गिवांर; त्यागन कर संग्रह करे सरे, तिणने छे धिक्कार रे ॥ मू० ॥ १३ ॥ कनक कामणी छोड़नें सरे, पाले शुद्ध आचार; सुपनामें वंछे नहीं सरे, ते कहिये अणगार: राम कहे मुनिवर भणी सरे, वंदो वारंवार रे ॥ मू० ॥ १४॥ उगणीसे अष्टा-दसे सरे, जोधपुर सेखे काल, स्वामी वृद्धिचन्द प्रसादसुं सरे, जुगतसुं जोड़ी ढाल, सत गुरुनी किरपा थकी सरे, वरते मंगल माल रे ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ इति उपदेशी सिज्झाय समाप्तम् ॥

॥ अथ हितशिक्षाकी सज्झाय लिख्यते ॥

(एक मुनिवर देख्या वनमें ॥ ए देशी)

आखर तेरे काम नहीं आइ, तूं जोवेनी आंख झुकाइ ॥ आ० ॥ टेर ॥ चुन चुन मटिया महल चुनाया, ऊंडी नींव लगाइ, आ० ॥ १ ॥ नारी रूपा अप्सरा सरीखी, जोड़ी मिली मन चाइ ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती, म्होरांकी थेली चुनाइ ॥ आ० ॥ ३ ॥ मात पिता भ्राता सुत भग्नि, ज्ञाती न्यातीने मित्राइ ॥ आ० ॥ ४ ॥ वसन भूषण वाहन वहुतेरे, और सहु ठकुराइ ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र ज्योतिषने वैद्यक, इलम और पंडिताइ ॥ आ० ॥ ६ ॥ राज काज हाथीने घोड़े, पल• टण और सिपाइ ॥ आ० ॥ ७ ॥ दान शील तप भावना भावो, ए छे साची कमाइ ॥ आ० ॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव साधो, जद लेखे

॥ अथ सप्त व्यसन निषेध स्तवन ॥

(देशी ख्यालनी)

संसारी लोको सात व्यसन छोडो भावसुं ॥ सं० ॥ टेर ॥ जुवा खेलण मांस मद्य और, वेश्या व्यसन शिकार; चौरी पर रमणीको रमवो, सातूं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ १ ॥ जूवा खेलीया पांडवा सरे, मंस भखीयो वक-राय; मदिरा पीवी जादवां सरे, जड्यां मूलसें जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्याने सेवी, ब्रह्मदत्त आखेट; सत्यघोष पर धनके करण, पहुंतो नरकां थेट हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ रावण राजा वड़ो अभिमानी, तीन खंडको स्वामी, रामचन्द्रकी सीता हरतां, भयो नरको गामी हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोड़दो सरे, है जीवन दुखकार; रामचन्द्रकी यही सीख है, सातुं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥

॥ इति सप्त व्यसन निषेध स्तवन समाप्तम् ॥

डेल्यां थारी बहन भाणजी, सेरयां थारी माय रे। द्वारामतीमें कोइ न चाले, कोइन राखण हार रे ॥ मन० ॥ ६ ॥ माय तेरी सदा झूरे, घेन घार तिवार रे। त्रीया तेरी सदा झूरे, पण कोइ न राखण हार रे ॥ मन० ॥ ७ ॥ हाड जले ज्युं लाकड़ी, केश जले ज्यु घास रे। कंचनसी देह जले पण कोइ न आवे पास रे ॥ मन० ॥ ८ ॥

॥ इति वेरागी उपदेशी सज्झाय समाप्तम् ॥

—:•:—

॥ श्री ऋषभदेवजीरो हालरीयो ॥

मा मोरा देवी गावेरे हालरीयो. झुलेरे हमारो ऋषभोजी पालणो पतरोए ॥ टेर ॥ रत्न जड़त लड़ा लुम्बा रण कंना. इन्द्र सुधर्मा इण आगे धरीयो ॥ मा० ॥ १ ॥ झुलने झुलावे

चचाके— च०

चरचा करीजे चोखी चातुरसु ज्ञान केरी,
मूरखसु चरचा कर्यां पराल सो कूटे है।
चरचा करी परदेशी चरचा करी हरकेशी,
चरचा कर्यांसु राजा श्रेणिक सुलटे है।
चरचा करी है चोखी संजति ऋषभालीजी,
[illegible] सुन [illegible] कर्मांसुं छूटे है।
[illegible] बालचन्द कहे चरचासुं कर्म दहे,
[illegible] सुन वहे आठों कर्म तूटे है ॥ ६ ॥

[illegible] ह०

[illegible] मांहो आयु [illegible] है मूढ मेरो,
[illegible] आगनमें पाछे पिछतायगो।
[illegible] जोवनमें [illegible],
[illegible] दुर्गतिमें जायगो।
[illegible] काया [illegible],
[illegible] पुद्गल [illegible]।

णणाके— ण०

णाणाविध भेख धरे णाणाविध कर्म करे,
णाणाविध पेट भरे मिटे नहीं मरणो।
णाणाविध गुरु गिणे णाणाविध देव भणे,
णाणाविध जीव हणे धर्म नहीं शरणो।
णाणाविध धोक देवे णाणाविध धूप खेवे,
णाणाविध खण लेवे नहीं हुवे उद्धरणो।
ऋषि लालचंद कहे देव अरिहन्त लहे,
गुरु ही निग्रन्थ मांहे दया धर्म करणो ॥१५॥

तताके— त०

तरण तारण देवताकी नित कीजे सेव,
तेही अरिहंत कर्म वैरी जाने हणिया।
तेही गुरु तरण तारण त्यागीया सावज्ज जोग,
भोग सहु छांड दिया सोई गुरु गिणीया।
तत्तसार तेही धर्म जाणे दया तणा मर्म,
तेसुं टुटे आठु कर्म शिवसुख भणीया।

नमे हय नमे गय नमे दानी नमे ज्ञानी,
नारेलने केसा जल नमे फल भारी है ।
नमे पुत्र पुन्यवान नमे वहु शीलवान,
नमे शिष्य विनयवान सोही अवतारी है ।
ऋषि लालचंद कहे नम्या जग येल लहे,
सोने से ही मोंगो मोक्ष नम्या अधिकारी है ।२०।

पापके— ५०

पापहु अठारह हिंसा झूट चोरी मैथुन,
परिग्रह क्रोध मान माया लोभ जाणिये ।
पापमूल रागद्वेष कलहने अभ्याख्यान,
आल पैशुन परपरिवाद नहीं भणीये ।
पाप मांहि आलो रति अरति धर्म मांहि,
माया मोसो मिथ्या दर्शण सल्ल यही जाणिये ।
ऋषि लालचंद कहे परम पद पाया लेवे,
सुगति अनन्त सुख मिलका वखाणीये ॥ २१ ॥

॥ नेमनाथ चरित्र ॥

॥ सिलोको ॥

सद्गुरु कृपा करजो जी हमसें, नित नित पाये लागुं जी तमसे; कैसूं सीलोको नेमजी केरो, सुणतांई होवे काज भलेरो; नगरी द्वारामती कृष्ण वसाई, जादवां केरी चढ़ती पुन्याई; सोनेकी नगरी अद्भुत दीपे, जिण में तो वेरी जादव जीपे ॥१॥ एक दिवस श्रीनेमकुमारो, आये शस्त्र शालामें साथीड़ा लारो; शंख वजवायो धनुष्य चढ़ायो, सुणतांई शब्द कृष्ण थरराये: ओ राज लेवे जो नारी परणाउं, परणे नहीं परणो निश्चे करवाउं; राजी मतीनी कीधी सगाई, अपने कोड़स जांन वणाई ॥२॥ हाथी पर शोभे नेम जिणन्दो, अधिका तो शोभे नारोंमें चंदो: नरनारीका मिलिया बहु वृन्दो, घरघरमें होवे अधिक अनन्दो: पशु वांसू वाड़ा टाटा जी भरियो, छोड़ी पशुवांने। उप-

हीरढामें धार ॥ वं० ॥ ११ ॥ संमत अठारे तयालीसे जाण, पुज जेमलजीरी अमृत वाण । चोमासे स्तवन कीयो पिपाड ॥ वं० ॥ १२ ॥ असाढ़ सुद सातमरे दीन, गणधरजीने गायो इक मन ॥ आसकरणजी भणें अणगार ॥ वं० ॥ १३ ॥

॥ इति इग्यारे गणधारको स्तवन समाप्तम् ॥

—:*:—

गोरल ईसरजी कवे तो हंसकर बोलना हे ॥ एदेशी ॥

म्हे तो चौवीसे जिनवर वांदसांजी, जिन साथे प्रीति सांधसांजी ॥ टेर ॥ पेला ऋषभ अजित तीजा संभवाजी, चौथा अभिनंदन सुखकारी, पंचम सुमति सदा हितकारी, छठा पद्मप्रभ बलिहारी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ सप्तम सुपास

ज्ञान प्रकाश दीखाया । नंद कहे चरणां में नमुं, श्रीशासण नायक मोक्ष सिधाया ॥ ६ ॥

॥ इति सवैया समाप्तम् ॥

६ कारण हींसा करे ।

१ जीतवार अर्थे हींसा करे,
२ प्रशंसारे अर्थे हींसा करे,
३ मानरे अर्थे हींसा करे,
४ पुजाणरे अर्थे हींसा करे,
५ जनम-मरण-मुकाण-रे अर्थे हींसा करे,
६ दुख मीटाणरे अर्थे हींसा करे ।

—:*:—

८ मित्र ।

१ जन्मको मित्र माता पीता,
२ घरमें मित्र धन और स्त्री,
३ देह रो मित्र अन्न,
४ आतमा रो मित्र कर्म,
५ रोग रो मित्र औषधि,
६ संग्राम में मित्र भुजा,
७ परदेश में मित्र विद्या,
८ अन्तकालमें मित्र श्रीजिनेश्वर देवको धर्म।

—:*:—

९ ठिकाना रोग उपजे ।

१ घणो खावे तो रोग उपजे,
२ अजीर्ण उपर खावे तो रोग उपजे,
३ घणु सोवे तो रोग उपजे,
४ घणु जागे तो रोग उपजे,

कन्या लीनो साधपणो, अठारे लेप भणीने आई ॥ ब्राह्मी० ॥ १० ॥ सहेंस साठनी गिणती लाया आदेश्वरजी री हुई चेल्या, वहु वलजीने समभा वण मेल्या, एतो आदेश्वरजी सिखाई, सतियां मुगल मार्ग में सिधाई ॥ ब्राह्मी० ॥११॥

॥ इति ब्राह्मी सुन्दरी स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ साधुवन्दना प्रारम्भ ॥

॥ ढाल चउपईनी तथा सिंधनी ए देशी ॥

प्रथम नमुं शिवसुखके स्वामी, नाम निरंजन ज्योति प्रकाशी। जनम मरण दुःख नाहीं निकासी, अजर अमरपद वे अवि-

सांब कुमरको दोय वखाणी। अवर अनेकसुं यादव नारी, मुगति गई बहु राजकुमारी ॥ २० ॥ थावच्चा सूकदेव सेलगराया, धर्मरुचि धर्मघोष कहाया। पुंडरीक चारित चित्तलाया, मेघकुमार मेरे मन भाया ॥ २१ ॥ सेणिक सुत तेरह वयरागी, भादाके सुत नव बड़भागी। अभयकुमार दसे सुमनाजी, धन धन तपसी साधु धनाजी ॥ २२ ॥ तेरह दस तिरीया तन नारी, नंदादिक श्रेणिक नृप नारी। ते तजी पुत्र मंत्री जिन शत्रु, नल्य तणा पट जाण सुमित्र ॥ २३ ॥ खंदग सेठ सुदर्शन दाखं, दान दीयो बहु काय सुभाषं। करकण्डु द्रुमुह नमि निगई, सिंह महाबल संजय सुगई ॥ २४ ॥ चित्र संभूति कपिल हरकेशी, गरद-भाल केसी परदेशी। इषुकारी मृगसुत बहु साथी, समुद्रपाल रही नेमि अनाथी ॥ २५ ॥ वज्री राजकुमर ऐवंता, आद्रकुमार महा नम-

रीझी तुं नाहीं, कृत घन लख उपगारे री काया ॥ अ० ॥ ५ ॥ जीव सुनो यह रीत अनादी, काहे कहत वार वारे । में न चलुंगी तो संग तेरे, पाप पुन्य दोय लारे री काया ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिनवर नाम सार भज आतम, काया भरम संसारे । सुगुरु वचन परतीत धरत शुभ, आनन्द भयै हैं हमारे री काया ॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ इति काया स्वाध्याय सिज्झाय समाप्तम् ॥



चोरासी लाख पूरव आउ। अतिसे जिणजीरा चोतीस ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जगन साधु जी धारे सो कोड़ी, दश लाख जगन कवल ग्यानी। वांणी रा गुण कह्या पैंतीसो ॥ श्री० ॥ ॥ ७ ॥ तिर्थंकर एकण मेरु लारे, ज्यांरे साध साधवीया रो परीवारो। ए तो मुक्ति जासी आठु कर्म पीसी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ वेहरमान वीसउ जाणी, ज्यांरो भजन करो उत्तम प्राणी। ज्यांरे पूरे मन रो जगीसो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ शहर मेडतो शुभ ठामो, रिषी जैमलजी किया थारा गुण ग्रामो ॥ श्री० ॥ १० ॥

॥ इति वीस वेहरमान स्तवन समाप्तम् ॥

अ

अआके, अजर अमर अविनाशी आविकारी।
सिद्ध अरूपी अखंड मंड, अरागी अरोगी है ॥
अवेद अखेदी अविछेदी अकषाई ज्ञानी,
अलख अखय गुणि, असोगी अभोगी है।
अकल अमल सुध, अचल अगम्य गम्य,
अलेसी अरागी जोगी, अजोणी अजोगी है।
ऋषि लालचन्द कहे, केवल दंशण लहे,
सिद्ध है अनंत ज्ञानी अनंत उपयोगी है ॥ ६ ॥

आ

आ आके. आछी करचां आछी होवें,
आछी विन युंही खोवे. आछी करचा करणी
तो गरभ न आवेगो । आछी दया आछो दान,
आछी सत्य आछो ज्ञान. आछो शील आछो
ध्यान, आछी चम्या लावेगो। आछो विनो
आछो क्यास, आछो पासो आछो वास, आछी
वाणी आछो भ्यास. मुगत्यांमे पावेगो। ऋषि

सालिभद्र सुख लिया, धं गककी गोदमें [illegible]
लालचन्द कहे एही ने आनंद लहै. [illegible]
मुक्ति गया, हरखकी होदमें ॥ ६ ॥

उ

उउके, उदम करत जीव, पापमांहि [illegible]
उदम करीने पापी, पेटको भरत है । [illegible]
करत जीव. छत्तिसुंही पाग पाप. [illegible]
चोरासी में फिरके मरत है । [illegible]
नरक निगोद गया, पापके उदम [illegible]
फिरत है । ऋषि लालचंद कहे [illegible]
लहै.धरम उदम कीयां. [illegible] है । [illegible] ।

ऊ

ऊउके. उदै जदआवे [illegible]
रहसी शर्म. उदै आयां [illegible]
पाया है । उदै आयां [illegible]
देवादिक. रावण [illegible]
है । उदै आवे पुन्य [illegible]

ऐ

ऐऐके, एही जीव ज्ञान विना, एही जीव ध्यान विना, एही जीव दांन वीना, जनम गमावें हैं। एही जीव तप विना, एही जीव त्याग विना, एही जीव भाग विना, जग में भमावे हैं। एही जीव आंधो ऊवो, एही जीव वांदो हुवो. एहीजी मांदो हुवो, धर्म न ध्यावे है। ऋषिलाल चंद कहे. एही जीव दुःख सहै, पापकर्म कर्‍यां पार. गत नहीं पावे है ॥ १७ ॥

ओ

ऊंचकुल आयो नेने. ऊंचो काम कांई कर्‍यो. ऊंचकुल ऊंचीजात. पावे दया धर्म थी। ऊंचोमन राखे संत. साधनको देख देख, ऊंचो वंश पायां नहीं. छूटे आठुं कर्म थी। ऊंचो नीचो होय पुन्य. पाप सेती एही जीव, क्षमा दया दान लाहो. लीजे लज्या समर्थी। रिषिलालचंद कहे. ऊंचागत नद लहे. दया धर्म पाले अने. छूटे मिथ्या मर्म थी ॥१८॥

(सोरठा)

श्री जय जिनेंद्राय नमः

संग्रह कीनो सार, श्री गुरुदेव प्रसाद से ।
उतरे भवजल पार, याको जो निशदिन पढ़े ।१।
श्रीजैन धर्मको सार, संग्रह सुश्रावक कियो ।
विक्रमपुर मझार, ज्ञान तणो अनंद लियो ।२।
ये पुस्तक सुखदाय, गोविन्दराम अरपण कीवी ।
प्रभु चरण चित्तलाय, शुद्ध मनसे पुस्तक पढ़ो ।३।
पढ़िए चित्त लगाय, जतना पुस्तक राखिये ।
विघ्न कोटि मिट जाय, सुख सम्पत सबही मिले ।४।
धर्म तणो यह पंथ, ज्ञान दयाको मूल है ।
पूर्ण भयो यह ग्रन्थ, जैन धर्म प्रसादसे ।५।

चिठी पत्री नीचे लिखे पतेसे करें—

और अपना ठिकाना (पता) नागरी (हिन्दी) अंग्रेजी दोनों साफ २ अक्षरों में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस तथा जिला अङ्गरेजीमें साफ २ लिखें और डाक खर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ भेजें, जो किताब हमारे यहां स्टाकमें तैयार होगा तो भेजा जायगा अगर किसी को पहला पूछना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड लिखकर पूछ लेवे ।

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया,

"श्री जैन ग्रन्थालय"

मुहल्ला—मरोटीयांका

बीकानेर (राजपूताना)